अजायब बानी

मासिक पत्रिका

नवम्बर-2024

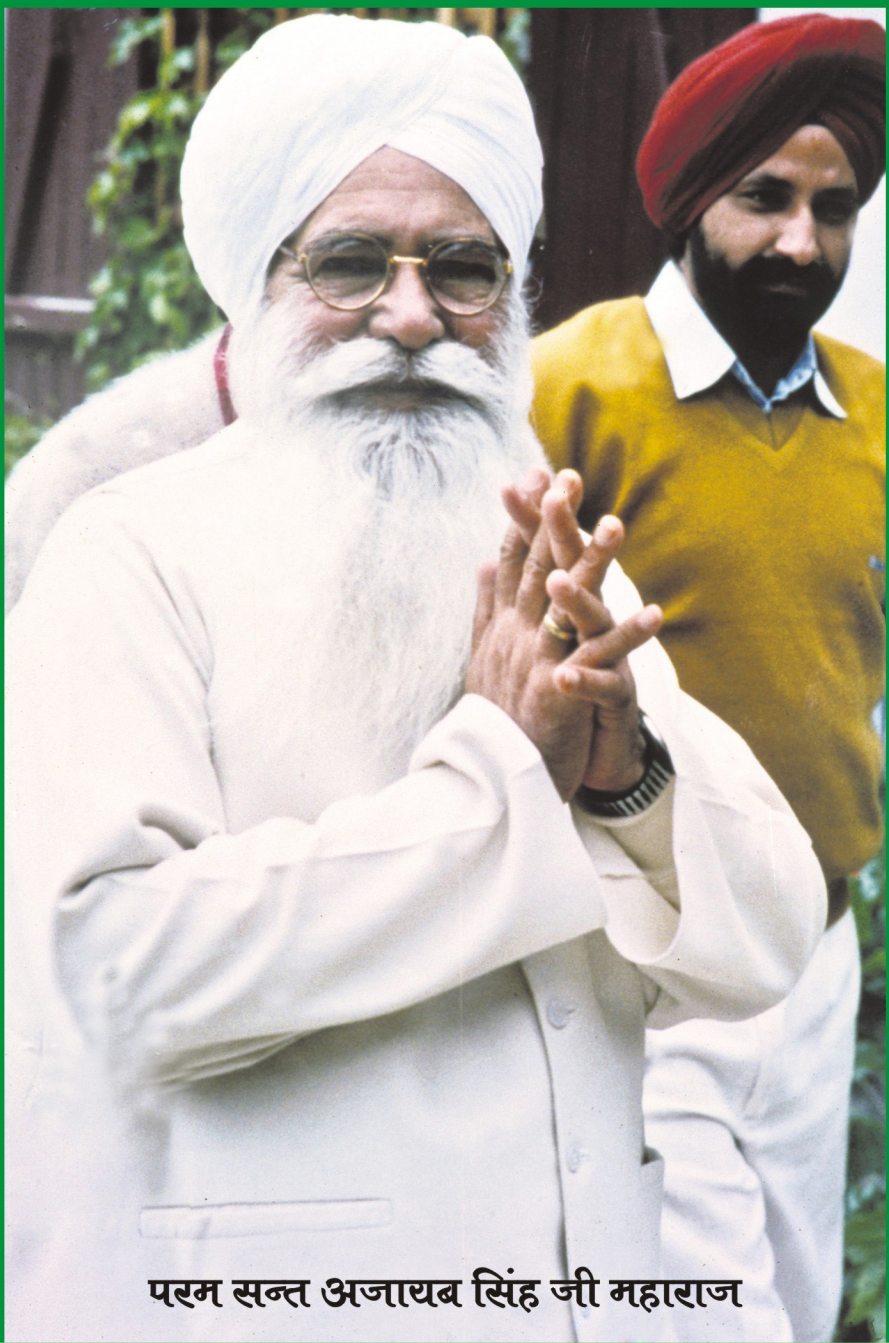

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

RNI No - RAJHIN/2003/9899

मासिक पत्रिका
अजायब बानी

वर्ष–बाइसवां	अंक–सातवां	नवम्बर–2024

3

सतसंग – परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

काल की रचना

स्वामी जी महाराज की बानी 07 जनवरी 1979

साँस-साँस सिमरो गोबिंद

साँस-साँस सिमरो गोबिंद, मन अंतर की उतरै चिंत, (2)

1. पूरे गुरु का सुन उपदेश, (2) पारब्रह्म निकट कर पेख, (2)
साँस-साँस .....

2. आस अनित त्यागो तरंग, (2) सन्त जनां की धूर मन मंग, (2)
साँस-साँस .....

3. आप छोड़ बेनती करो, (2) साध संग अग्न सागर तरो, (2)
साँस-साँस .....

4. हर धन के भर लेहो भंडार, (2) 'नानक' गुरु पूरे नमस्कार, (2)
साँस-साँस .....

प्रकाशक : **सन्तबानी आश्रम**
16 पी.एस. रायसिंह नगर–335 039
जिला–श्री गंगानगर (राजस्थान)
विशेष सलाहकार : **गुरमेल सिंह नौरिया**
96 67 23 33 04, 99 28 92 53 04

संपादक : **प्रेम प्रकाश छाबड़ा**
99 50 55 66 71
उप संपादक : **नन्दनी**

e-mail : dhanajaibs@gmail.com 272 Website : www.ajaibbani.org
RSG-01, V.I.P. Colony, Ridhi-Sidhi Enclave Ist, Sri Ganganagar - 335 001 (Rajasthan)

सतसंग–परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

काल की रचना

07 जनवरी 1979 | स्वामी जी महाराज की बानी | 77 आर. बी.आश्रम (राजस्थान)

काल ने जगत अजब भरमाया। मैं क्या क्या करूँ बखान।।

यह बानी श्री हुज़ूर स्वामी जी महाराज की है, हमारा अलग–अलग महात्माओं की बानी लेने या पढ़ने का यही भाव हैः

सौ स्यानेया इको मत मूर्खां आपो अपनी।।

महात्मा चाहे आज से पांच हज़ार साल पहले हुए, चाहे पाँच सौ साल पहले हुए, चाहे किसी भी मज़हब या मुल्क में हुए हैं सब सन्तों का एक ही उपदेश रहा है कि परमात्मा एक हैं। ऐसा नहीं कि हिन्दुस्तान में रहने वालों का परमात्मा और है या अमेरिका–अफ्रीका में रहने वालों का परमात्मा कोई और है। महात्मा हमें समझाते हैं कि इंसान एक ही तरीके से पैदा होता है और समय मुताबिक सबको एक ही तरीके से मौत आती है। चाहे कोई पश्चिम का है या पूर्व का है सबके हाथ, कान, नाक एक जैसे है। किसी महात्मा ने आकर कोई समाज या कौम नहीं बनाई। हम मन के कहने पर कौम और मज़हब बनाते हैं।

आप इतिहास पढ़कर देखें कि आज से पांच हजार साल पहले बौद्ध नहीं थे, दो हजार साल पहले ईसाई नहीं थे, चौदह सौ साल पहले मुसलमानों का नामोनिशान तक नहीं था। इसी तरह सिखों की हिस्ट्री बताती है कि आज से पांच सौ साल पहले सिखों का कहीं भी नामोनिशान नहीं था और सौ साल पहले राधास्वामी को कोई जानता भी नहीं था।

महात्मा हमें समझाते हैं कि दुनिया पांच हजार साल पुरानी नहीं, चौदह सौ साल पुरानी नहीं या पांच सौ साल पुरानी नहीं है। पहले भी किसी न किसी तरीके से परमात्मा को दुनिया मिलती रही है क्योंकि ऐसा नहीं है कि परमात्मा दुनिया को पैदा करके भूल जाते हैं। यह जो चलती फिरती

दुनिया नज़र आ रही है, ज़रूर इसे कोई बनाने वाला भी है, इसके पीछे कोई न कोई गुप्त ताकत काम करती है, जिसे महात्मा कुल मालिक या परमात्मा कहते हैं। महात्मा उस मालिक के भेजे हुए इस संसार में आते हैं। वे आकर कोई नई कौम नहीं बनाते, किसी पुराने समाज को नहीं तोड़ते।

महात्मा समझाते हैं कि आप सब अपनी कौम, अपने मज़हब में रहें और अपने–अपने रीति–रिवाज़ करें लेकिन मुक्ति नाम में है। नाम आपके जिस्म के अंदर है। आप कोई भी धर्म पुस्तक या अच्छा ग्रन्थ पढ़ लें, सारे ग्रन्थ एक ही चीज़ समझाते है कि मुक्ति नाम में है। महात्मा हमें नाम के साथ जोड़ते हैं। परमात्मा जब भी जीवों को रोशनी देते हैं तो किसी न किसी महात्मा के ज़रिए ही देते हैं। यह **काल की रचना** है। हमारे सिख भाईयों को पता नहीं कि कोई काल भी है, कोई दयाल भी है। गुरु साहब ने अपनी बानी में बहुत खुलकर काल और दयाल का भेद लिखा हैः

खंड पताल दीप सभि लोआ, सभि कालै वसि आपि प्रभि कीआ।।

परमात्मा ने खंड–ब्रह्माण्ड रचकर, उसका इंतज़ाम काल के सुपूर्द किया हुआ है। काल वह ताकत है जहाँ मौत और पैदाईश है, वहां जीव परेशानियों में घिरा हुआ है। दयाल वह है, जहां मौत और पैदाइश नहीं। हमारी आत्मा शांति के देश से बिछड़कर, काल के राज्य में आकर अपने आपको भूल गई। मन का साथ लेकर अति गंदी और मैली हो चुकी है।

जिस तरह जब पानी बादलों से ज़मीन पर आता है, वह बहुत साफ़ होता है लेकिन जब वह पानी किसी गंदी जगह में आकर गिरता है तो उस पानी में से बदबू आने लगती है। जब उसी पानी को सूरज की तपिश मिलती है, वह भाप बनकर सीधा बादलों में जाकर समा जाता है फिर उसे पता चलता है कि गंदगी कोई और चीज़ थी, मैं कोई और चीज़ हूँ।

इसी तरह जब तक हमारी आत्मा मन का साथ लेकर बैठी है, यह सोचती है कि मैं गंदगी हूँ लेकिन जब इसे 'शब्द–नाम' की तपिश मिलती

है, यह इस दुनिया का साथ छोड़कर, उस 'शब्द' के साथ अटैच हो जाती है फिर इसे पता चलता है कि विषय–विकारों के स्वाद और दुनिया की मान बड़ाई सब नाशवान थे। मैं तो प्योर और मालिक की अंश थी, मालिक को भूलकर मैंने ये कष्ट उठाए।

गुरु साहब समझाते हैं कि यह **काल की रचना** है, काल ने बहुत सुन्दर ढंग से जीवों को भरमाया हुआ है लेकिन हम सोसाईटी में बंधे हुए है, उसे छोड़ने के लिए तैयार नहीं हैं। जो हमें मारता है हम उसी को पूजने में लगे हुए है। जिस तरह कोई धूप में बैठा था, किसी ने उससे कहा कि छाया में आ जाओ तो उसने कहा कि मुझे क्या मज़दूरी दोगे? हमारी भी यही हालत है। महात्मा हमें समझाते हैं कि मालिक ने आपके अंदर मुक्ति का इंतजाम किया हुआ है, हम आपको मुफ्त में ही वह साधन दे सकते हैं।

जो साधन थे पिछले जुग के। सो कलजुग में किये प्रमान।।

सतयुग, त्रेता और द्वापर पिछले युग थे और आज कलयुग है। सतयुग में एक लाख वर्ष की उम्र लिखी है और मन की ताकत हाथी जितनी लिखी हुई है। त्रेतायुग में उम्र कम होकर दस हज़ार वर्ष की रह गई और मन की ताकत एक घोड़े जितनी रह गई। द्वापर युग में उम्र का दसवाँ हिस्सा कम होकर एक हज़ार वर्ष रह गई और मन की ताकत बकरी जैसी रह गई। आज कलयुग है उम्र का दसवां हिस्सा और कम हो गया, सौ साल की आयु है। मन की ताकत एक कीड़ी जैसी है लेकिन सौ साल तक भी बहुत थोड़े ही आदमी जीते हैं। आमतौर पर पचास–साठ साल के होने पर हम इस संसार को त्याग देते हैं।

महात्मा हमें प्यार से समझाते है कि जो काम हम एक लाख वर्ष में कर सकते थे, वे दस हज़ार वर्ष में कैसे कर सकते हैं? उसी तरह जो काम हम दस हज़ार वर्ष में कर सकते थे, वह काम हम एक हज़ार साल में कैसे कर सकते हैं? या जो एक हज़ार साल का काम था उसे हम सौ या

पचास–साठ साल में कैसे कर सकते हैं? तक़रीबन बीस–पच्चीस साल तो विद्या हासिल करने में ही लग जाते हैं। अगर साठ साल की उम्र है तो इसका कुछ हिस्सा रातों में निकल जाता है। शब्द–नाम की कमाई करने के लिए हमारी आयु रह ही कितनी गई? यज्ञ, हवन, पढ़ना–पढ़ाना जो पिछले युग के साधन थे वे हम आज कलयुग में कर रहे हैं। यह **काल की रचना** है। इस तरह काल ने हमें भ्रम में डाला हुआ है।

गुरु नानक साहब हमें प्यार से समझाते हैं कि आप जिस युग में आए हैं, सबसे पहले उस युग का धर्म पढ़ें क्योंकि जिस गवर्नमेंट का राज होता है अगर हम उसके कायदे कानून के मुताबिक चलेंगे तो ही हम सुख से ज़िन्दगी व्यतीत कर सकते हैं। पहले हिन्दुस्तान में अंग्रेजों का राज्य था। हम उनके कायदे कानून मानते थे तो थोड़ी बहुत सुख की सांस लेते थे। आज हिन्दुस्तान की गवर्नमेंट है अगर आज हम यह कहें कि हम आपका हुक्म नहीं मानते तो आपको पता ही है कि फिर क्या हालत होती है? गवर्नमेंट का हुक्म मानना पड़ता है। इसी तरह जो युग है, उस युग के क़ानून के मुताबिक हमें चलना पड़ेगा। गुरु साहब कहते हैं:

इसु जुग का धरमु पड़हु तुम भाई। पूरै गुरि सभ सोझी पाई।
ऐथै अगै हरि नामु सखाई।। ऐथै अगै हरि नामु सखाई।।

आप सबसे पहले इस युग का धर्म पढ़ें अगर आपको चार दिन शांति से व्यतीत करने है और आगे जाकर भी अपनी ज़िन्दगी मालिक के साथ मिलानी है तो आप शब्द–नाम की कमाई करें। गुरु अर्जुन देव जी कहते हैं:

अब कलू आइओ रे।। इकु नामु बोवहु बोवहु ।।
अन रूति नाही नाही मतु भरमि भूलहु भूलहु।।

कलयुग आ गया है, नाम की कमाई करें और कोई ऋतु ही नहीं, कोई कारगर उपाय ही नहीं जिससे आप परमात्मा से मिल लेंगे। स्वामी जी महाराज कहते हैं:

कलजुग कर्म धर्म नहिं कोई। नाम बिना उद्धार न होई।।

इस युग में आप जितना मर्जी कर्म–धर्म कर लें, वह किसी लेखे में नहीं, सब पानी को मथने के समान है। स्वामी जी महाराज कहते हैं:

पानी मथे हाथ कुछ नाहीं। क्षीर मथन आलस भारा।।

घी जब भी निकलेगा दूध से ही निकलेगा, पानी को जितना मर्जी मथ लें उस पर सिर्फ झाग ही आएगी। इसी तरह मुक्ति नाम में है, आप जितना मर्जी पढ़–पढ़ा लें या कोई उपाय कर लें, आपकी आत्मा को कभी शांति नहीं मिलेगी। पढ़ने–पढ़ाने का मतलब यह नहीं कि आप पढ़ें नहीं। अब हम बानी पढ़ रहे हैं, पढ़ने–पढ़ाने का मतलब इतना ही है कि आप सोचकर पढ़ें कि जो कुछ पढ़ रहे हैं उसका क्या मतलब है, यह बानी और ग्रन्थ हमें क्या कह रहे हैं? गुरु साहब कहते हैं:

सिमृति बेद पुराण पुकारनि पोथीआ, नाम बिना सभि कूड़ु गाली होछीआ।।
नामु निधानु अपारु भगता मनि वसै, जनम मरण मोहु दुखु साधू संगि नसै।।
मोहि बादि अहंकारि सरपर रुँनिआ, सुखु न पाइनिब मूलि नाम विछुँनिआ।।
मेरी मेरी धारि बंधनि बंधिआ, नरकि सुरगि अवतार माइआ धंधिआ।।
सोधत सोधत सोधि ततु बीचारिआ,नाम बिना सुखु नाहि सरपर हारिआ।।
आवहि जाहि अनेक मरि मरि जनमते,बिनु बूझे सभु वादि जोनी भरमते।।

सम्रतियों, वेदों और पोथियों को पढ़कर देख लें, सब यही कहती हैं कि नाम के बिना किया गया सब ओछापन है। नाम भक्तों के अंदर निवास करता है। गुरु साहब मालिक के आगे अरदास करते हैं:

विसरु नाही दातार आपणा नामु देहु, गुण गावां दिनु राति नानक चाउ एहु।।

हे परमात्मा, मुझे विसारो नहीं, मैं आपसे नाम मांगता हूँ। मेरी यही चाह है कि नाम लेकर रख नहीं देना बल्कि नाम की कमाई करनी है। कलयुग में हम पिछले युगों के साधन करने में लगे हुए हैं।

महात्मा समझाते हैं कि वक्त की चार चीज़ें काम आती हैं। धनवंतरी और लुकमान बेशक अच्छे, काबिल हक़ीम थे, मुर्दे को ज़िंदा कर सकते

थे अगर हमारा लड़का बीमार है और हम यह कहें कि हमें तो धनवंतरी वैद्य से ही दवाई लेनी है तो वे आकर दवाई नहीं देंगे चाहे हम उन पर जितना मर्जी भरोसा कर लें।

इसी तरह अगर हम कहें कि राजा रणजीत सिंह और राजा गंगा सिंह बहुत अच्छे थे, वे ही आकर अच्छा राज्य करेंगे। आप उनको जितना मर्जी अच्छा कह लें लेकिन वक्त का मजिस्ट्रेट ही हमारा फैसला कर सकता है। इसी तरह किसी स्कूल मास्टर को स्कूल छोड़े हुए पचास या साठ साल हो गए अगर हम यह कहें कि हमारे बच्चे को वही आकर पढ़ाएगा चाहे आप उस मास्टर से जितना मर्जी प्यार कर लें, जब उस मास्टर को स्कूल छोड़े हुए पचास साल हो गए हैं तो वह आकर हमारे बच्चे को कैसे पढ़ाएगा?

इसी तरह जो सन्त–महात्मा मालिक के प्यारे पहले इस संसार में आए, चाहे हम उन्हें भगवान कहें, उनकी जितनी मर्जी इज्जत कर लें और यह कहें कि वे आकर हमें 'शब्द–नाम' के साथ जोड़ देंगे, ऐसा कभी नहीं हो सकता। स्वामी जी महाराज की बानी में आता है:

पिछले की तज टेक तेरे भले की कहूँ। वक्त गुरु को खोज तेरे भले की कहूँ।।

हम तेरे भले के लिए कह रहे हैं कि कोई वक्त का महात्मा ही 'शब्द–नाम' से जोड़ सकता है। कबीर साहब की बानी में आता है:

राम कृष्ण ते को बड़ो तिनहु भी गुर कीन।
तीन लोक के नाएका गुरु आगे आधीन।।

जितने भी सन्त संसार में आए, सबने ज़ोर देकर कहा कि गुरु के बिना नाम नहीं मिलता और नाम के बिना मुक्ति नहीं। इस युग का धर्म पढ़कर देखें अगर हम उसके मुताबिक़ करेंगे तो ही कामयाब हो सकते हैं।

मूरख प्रानी मन सैलानी। सो अटके जल और पाषान।।

तीन प्रकार के इंसान हैं एक चतुर, दूसरा मूर्ख और तीसरा इन दोनों के बीच में हैं। चतुर विद्या के अहंकार में हैं कि हमारे जैसा कोई पढ़ा–

लिखा नहीं है। बहुत से आदमी पैसा इकट्ठा करके तीर्थों के लिए निकल पड़ते हैं और कहते हैं कि हम तीर्थ कर आए हैं, मन में और अहंकार हो जाता है। जो बेचारे दोनों के बीच में हैं, वे चतुर और मूर्ख लोगों में से जिसका जोर पड़ा, उस तरफ चले जाते हैं। वे बेचारे या तो पानी में टक्कर मारते रहते हैं या पत्थरों को पूजते रहते हैं। कबीर साहब कहते हैंः

पाहन पूजै हरि मिलै, तो मैं पूजूँ पहार।

अगर पत्थर पूजने से भगवान मिलते हैं तो मैं पहाड़ पूजने के लिए तैयार हूँ। हम रोज़ धन्ना भक्त की बानी पढ़कर कहते हैं कि धन्ना भक्त ने परमात्मा को पत्थर में से पाया लेकिन आप बानी पढ़कर देखें:

जो पाथर की पाँई पाइ, तिस की घाल अजाँई जाइ।
ठाकुरु हमरा सद बोलंता, सरब जीआ कउ प्रभु दानु देता।।

पत्थर भक्ति सबसे निकृष्ट है। जो पत्थर की पूजा करते हैं, उनकी मेहनत व्यर्थ जाती है। मेरा ठाकुर बोलता है, सबको दान देता है और वह सबके अंदर है।

गोबिंद गोबिंद गोबिंद संगि नामदेउ मनु लीणा।
आढ दाम को छीपरो होइओ लाखीणा।।
बुनना तनना तिआगि कै प्रीति चरन कबीरा।
नीच कुला जोलाहरा भइओ गुनीय गहीरा।।
रविदासु ढुवंता ढोर नीति तिनि तिआगी माइआ।
परगटु होआ साधसंगि हरि दरसनु पाइआ।
सैनु नाई बुतकारीआ ओहु घरि घरि सुनिआ।
हिरदे वसिआ पारब्रहमु भगता महि गनिआ।

सबसे पहले नामदेव की कीर्ति सुनने से भक्त धन्ना को भक्ति का शौक पैदा हुआ, आधी कौड़ी के नामदेव छिम्पा थे, जब उन्होंने प्रभु की भक्ति की तो वे लाखों के हो गए। फिर मैंने सन्त कबीर की हालत देखी, वे छोटी–सी जाति में पैदा हुए थे। वे ताना बुनकर अपनी रोज़ी–रोटी का

साधन करते थे। जब उन्होंने प्रभु की भक्ति की तो बड़े–बड़े राजा–महाराजाओं ने आकर उनसे परमार्थ की रोशनी ली। इसी तरह रविदास जी जूते बनाते थे। जब उन्होंने साध संगत में आकर शब्द–नाम की कमाई की तो राजा–महाराजाओं ने उनके पास आकर 'शब्द–नाम' का भेद लिया।

इसी तरह भक्त सैन जी नाई जाति के थे, वे लोगों के घर जाकर निमंत्रण देते थे। वे राजा अकबर के सेवादार थे और रोज राजा की मालिश करते थे। एक दिन वे राजा अकबर की मालिश नहीं कर पाए, भगवान ने खुद भक्त सैन का रूप धारण करके अकबर की मालिश की। सैन नाई ने सुबह आकर राजा अकबर से माफ़ी मांगते हुए कहा, ''महाराज, मैं कल रात आपकी सेवा में हाजिर नहीं हो सका इसलिए आप मुझे माफ़ कर दीजिए।'' राजा अकबर ने कहा, ''सैन, कल रात को तूने मेरी इतनी सेवा की कि मुझे कोई होश ही नहीं रहा, मेरे शरीर को इतना आराम मिला कि मैं जो सोया उठा ही नहीं। आखिर अकबर ने भक्त सैन के आगे अपनी झोली फैलाई कि मुझे नाम का भेद बक्शो। गुरु साहब कहते हैं:

इह बिधि सुनि कै जाटरो उठि भगती लागा, मिले प्रतखि गुसाईआ धंना वडभागा।।

मैंने इतने गरीबों की हालत देखी वे सारे भक्ति करके ऊँचे हो गए तो जाट के दिल में भी ख्याल आया कि तू भी भगवान की भक्ति कर, शायद कामयाब हो जाए। वह बड़े भाग्य वाला हो गया अगर धन्ना भक्त को पत्थर में परमात्मा मिले होते तो वे जरूर लिख देते।

धंनै धनु पाइआ धरणीधरु मिलि जन संत समानिआ।।

जिनके आसरे ज़मीन–आसमान खड़ा है, वे मुझे सन्तों के पास मिले। हम बानी तो पढ़ते हैं लेकिन उस पर विचार नहीं करते।

स्वामी जी महाराज कहते हैं कि पानी चाहे अपना है या पराया है वह सिर्फ बदन की मैल दूर करता है, आत्मा की नहीं। गुरु साहब लिखते हैं:

कोटि तीरथ मजन इसनाना इसु कलि महि मैलु भरीजै।

आप चाहे अड़सठ तीर्थ भी कर लें वे सिर्फ आपके जिस्म की मैल ही उतारेगें। वही तीर्थ अच्छा है जिससे आपकी आत्मा की मैल उतर सकती है। अगर कोई सच्चे से सच्चा सरोवर या तालाब है तो वह आपका जिस्म है, इसमें लिव लगाकर 'शब्द–नाम' में स्नान करें, इसी से मैल उतरेगी।

बुद्धिमान अभिमानी जो नर। विद्या नारि के हुये गुलाम।।

पढ़े–लिखे विद्या के गुलाम बने बैठे हैं। सारे महीने, सारे वर्ष हर साँस के साथ पढ़ लें लेकिन लेखे में आने वाली एक ही बात है अगर सुरत शब्द के साथ लग गई तो बेड़ा पार है, नहीं तो राख छानने वाली बात है।

बाकी जीव बीच के जितने। ना मूरख ना अति बुद्धिमान।।
जप तप व्रत संजम बहु धोखे। पंच अग्नि में जले निदान।।

अब आप आमतौर पर किए जाने वाले कर्मों का ज़िक्र करते हैं जैसे हम धूनियाँ तपाते है, जिसमें चार धूनियाँ चार दिशाओं में होती हैं और पांचवी ऊपर सूरज की होती है। मैंने खुद धूनियाँ तपाई हुई है। आमतौर पर धूनियाँ मई और जून के महीने में तपाई जाती हैं। दोपहर के वक़्त सूरज की बड़ी गर्मी होती है, उस वक्त धूनियों के बीच बैठ जाते हैं।

महाराज सावन सिंह कहा करते थे कि जब हम नासिक गए, वहाँ एक साधु धूनियाँ तपा रहा था। मैंने उससे पूछा कि अंदर ही बहुत आग जल रही है, क्या वह आग बुझी? अंदर काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार की आग है जो हमें पागल करती है। जब अंदर की आग शांत नहीं हुई, बाहर आग जलाने से तुम्हारे जिस्म को और तपिश मिलेगी। ये **काल की रचना है**, काल ने धोखे रचे हुए हैं। हम अनजान है, पांच तरह की आग से तो पहले ही दिन–रात जल रहे हैं फिर भी हम उसी तरफ लगे हुए है।

आप जैनियों की हालत देख सकते हैं, कोई दो–चार दिन का तो कोई बेचारा महीने का व्रत रखता है। इसी तरह पढ़–पढ़ाई वालों की

हालत होती है। महाराज जी एक जैनी की मिसाल दिया करते थे कि वह तेल का दीपक भरके रख देता जब तेल खत्म होने पर दीपक बुझ जाता तब वह पाठ करना बंद करता। उनके घर में नई बहू आई थी, जब दीपक बुझने लगता तो वह उसमें और तेल भर देती। वह बेचारा भूख से व्याकुल हो गया, उसकी बुरी हालत हो गई लेकिन वह कह भी नहीं सकता था क्योंकि पाठ की लड़ी टूटती थी। यह हम पाठ करने वालों की हालत है।

आप गुरद्वारे के भाईयों–ज्ञानियों से पूछें कि भाई, क्या आपको शांति आई? क्या आपका मन कभी शब्द के साथ लगा? क्या आपके अंदर तृप्ति आई? गुरु नानक देव जी कहते हैं:

गिआनु धिआनु धुनि जाणीऐ अकथु कहावै सोइ।

'शब्द' सचखण्ड से उठकर हमारे माथे के पीछे धुनकारे दे रहा है, जो उस शब्द–नाम के साथ जुड़ जाता है, उसकी आत्मा को शांति है। सच में वही पढ़ा है और वही हमें पढ़ा सकता है। कबीर साहब कहते हैं:

दिनसु न रैनि बेदु नही सासत्र तहा बसै निरंकारा।
कहि कबीर नर तिसहि धिआवहु बावरिआ संसारा।।

ग्रन्थ–पोथियाँ उस जगह की महिमा बयान करते हैं जहाँ आपको जाना है और उस जगह जाने के लिए शौक पैदा करती हैं। एक पंडित कबीर साहब के साथ बहस करने के लिए बैल पर किताबें लादकर गया। उन दिनों में आज की तरह जीपें आदि नहीं थी। उस समय कबीर साहब घर पर नहीं थे, बीबी कमाली थी। पंडित ने बीबी कमाली से पूछा, ''क्या कबीर साहब का घर यही है?'' बीबी कमाली ने कहा, ''अफ़सोस की बात है, तू कबीर को इंसान समझता है। वे शरीर नहीं हैं, वे तो सचखण्ड में हैं। वहां तो चींटी भी पैर नहीं रख सकती और तू बैल पर किताबें लादे हुए घूम रहा है।'' वह बेचारा लाजवाब होकर वहां से चला गया।

कबीर का घर सिखर पर,जहां सिलहिली गैल।
पांव न टिकै पपील का, पंडित लादै बैल।।

देखो चरित्र काल करता के। कोई सिर कोई पैर रुंधान।।

अब आप कहते हैं कि ये काल भगवान के धोखे हैं कि किसी को पैरों से कुचलता है, किसी को हाथों से मसलता है। ये जीव 'शब्द–नाम' की कमाई की तरफ आ ही नहीं सकते।

भटक भटक भटकाया सब जग। कोई न लगाया ठौर ठिकान।।

सन्त जब बानी लिखते हैं तो किसी की निंदा नहीं करते बल्कि वे तो सच्चाई बयान करते हैं। स्वामी जी महाराज कहते हैं कि हम कौन–सी कौम का नाम लें जो भटकी हुई नहीं है। काल ने सारे जगत को गलत रास्ते पर डाला हुआ है। थोड़े से ही आदमी वेद–शास्त्र पढ़कर उन्हें समझ रहे हैं। हम सब अपनी–अपनी कौम बढ़ाने की होड़ में लगे हुए हैं।

महाराज सावन सिंह जी आमतौर पर मिसाल दिया करते थे कि एक महात्मा कहीं जा रहे थे, उन्हें एक शख्स मिला। उस शख्स ने कहा, ''देखो जी, जानवरों का कितना बड़ा झुंड जा रहा है।'' महात्मा ने उससे पूछा, ''तेरा उसमें क्या है?'' उसने कहा, ''मेरा तो कुछ नहीं मेरे ताऊ का बछड़ा है।'' हमारी भी यही हालत है अगर किसी की कौम बहुत बड़ी बन जाए तो उसे क्या मिल जाएगा?

सिखों का एक गुरु ग्रंथ साहिब है, उनके पचास दल बने हुए है। ईसाईयों का एक बाइबल है उनके बीस फिरके हैं, हिन्दुओं के फिरकों का तो कोई हिसाब ही नहीं। महात्मा जब भी आते हैं, वे कहते हैं कि आप सबसे पहले अपने आपको पहचाने कि हम कहाँ से आए हैं? हमें क्या करना है? हमारा परमात्मा कौन है? गुरु साहब कहते हैं:

एकु पिता एकस के हम बारिक तू मेरा गुर हाई।

सन्त आकर हमें यह समझाते हैं कि हमारा एक ही पिता परमात्मा है। हम सब एक पिता के ही बच्चे हैं। सब एक आसमान के नीचे और एक ही

धरती पर रह रहे हैं। जब बनाने वाला एक है तो उससे मिलने का तरीका और साधन भी एक ही है। जब महात्मा आते हैं, वे हमारे अंदर प्यार पैदा करके सबको इकट्ठा बिठाकर नाम जपवाते हैं। गुरु साहब कहते हैं:

खत्री ब्राहमण सूद वैस उपदेसु चहु वरना कउ साझा।
गुरमुखि नामु जपै उधरै सो कलि महि घटि घटि नानक माझा।।

चार वर्णो में सारा संसार आ जाता है, मेरा उपदेश चारों वर्णों के लिए साँझा है। आप सोचकर देखें अगर गुरु साहब का भाव पंजाबी अक्षरों से होता तो जो लोग पंजाबी पढ़े हुए नहीं थे, उनके साथ तो बहुत बेइंसाफी हो जाती। गुरुमुख जो नाम देते हैं, वह नाम सबकी देह में हैं। हम सारे ही उस नाम के हकदार हैं और सब उस नाम को प्राप्त सकते हैं। यह सब कुछ परमात्मा ने अपने हाथ में रखा हुआ है कि किसे नाम देना है, किसे नहीं देना। गुरु साहब कहते हैं:

तरसु पइआ मिहरामति होई सतिगुरु सजणु मिलिआ।

जब मालिक जीवों पर तरस करते हैं फिर वे तहकीक़ात करते हैं कि किसमें मुझसे मिलने की तड़फ है, किसे अपने साथ मिलाना है। अगर परमात्मा मेहर न करें तो चाहे महात्मा हमारे घर में ही क्यों न पैदा हो जाएं, पड़ोस में ही क्यों न रहने लग जाए, हमें ऐतबार ही नहीं आएगा। जिनकी किस्मत में लिखा होता है वे सात समुन्द्र पार से, हज़ार–लाख कोस दूर से आकर भी फायदा उठा लेते हैं क्योंकि उनकी आत्मा जाग चुकी है और वे परमात्मा के ध्यान में आ चुके हैं। गुरु साहब कहते हैं:

भागहिन गुरु ना मिले, निकट बैठया नित पास।

अगर आपके भाग्य में नहीं लिखा, चाहे गुरु आपके पास बैठे रहें, आप गुरु से नहीं मिल पाएंगे। आप गुरु नानकदेव जी की सारी बानी पढ़कर देख लें, एक–एक तुक पुकार रही है कि जिनके ऊँचे भाग्य होते हैं, उन्हें गुरु से मिलाया जाता है, उन्होंने अभी इस संसार समुंद्र में नहीं भटकना होता।

ऐसी हालत देख जगत की। संत सतगुरु प्रगटे आन।।

जब दुनिया परमात्मा को भूल जाती है, इंसान–इंसान का वैरी हो जाता है, धर्म की आड़ में पाप होने शुरू हो जाते हैं। गुरु नानक साहब ऐसी दशा का नक्शा खींचकर बताते हैं:

कूड़ु अमावस सचु चंद्रमा दीसै नाही कह चड़िआ।

जब सच का चंद्रमा छिप जाता है, संसार में अमावस जैसी रात हो जाती है तब परमात्मा किसी न किसी महात्मा में बैठकर दुनिया के अंदर शांति बांटते हैं, लोगों को 'शब्द–नाम' का भेद देते हैं और परमात्मा की खबर देते हैं। स्वामी जी महाराज कहते हैं:

संत रूप होय जग में आया। अपना भेद आप उन गाया।।

दुनिया साधु को क्या पहचानेगी? बड़े–बड़े महात्मा कबीर साहब, गुरु नानक साहब, मौलाना रूमी, शमस तबरेज़ इस संसार में आए। हम लोगों ने उन्हें पहचानना तो क्या था कभी उन्हें चैन से बैठने तक नहीं दिया। वे जिन पर दया करते हैं, उन्हें अपना भेद बताते हैं कि आप हमें इस तरीके से अपने अंदर खोज सकते हैं। इंसान का टीचर केवल इंसान ही हो सकता है, वे इंसान के अंदर बैठकर ही हमें समझाते हैं।

महाराज सावन सिंह कहा करते थे कि सन्तों के अंदर कोई ताकत काम करती है लेकिन हम उसे ताकत भी नहीं कह सकते, वह जो कुछ है, सो है। जब ऐसी हालत हो जाती है कि सब कौम–मज़हब आपस में लड़ना–झगड़ना शुरू कर देते हैं, रीति–रिवाज़ों में ही मुक्ति समझने लग जाते हैं फिर मालिक किसी ना किसी महात्मा के अंदर बैठकर 'सुरत–शब्द' का अभ्यास ताज़ा करवाते हैं।

इसी तरह महाराज सावन सिंह जी भी उस वक़्त आए जब दुनिया गुरु नानक देव जी की तालीम को बिल्कुल ही भूल चुकी थी, पढ़ने–पढ़ाने में ही मुक्ति समझने लग गई थी। महाराज सावन सिंह जी ने आकर सिखों

की बानी को बड़े प्यार से समझाया। वे ठंडा होंका लेकर कहते थे कि सिखों को गुरु नानक देव जी ने बहुत ही धन दिया है मगर अफ़सोस! इन बेचारों को पता नहीं है कि बानी क्या कह रही है।

आप खुद सोचकर देखें, जिसके घर में करोड़ों रुपए दबे हों और वह बाहर कौड़ी–कौड़ी मांगता हुआ मर जाए, उसे हम क्या कहेंगे? अगर कोई उसके घर का भेदी मिल जाए, उसे समझाए कि देख भाई, तेरे घर में तो करोड़ों रूपये दबे हुए हैं, तू उसे निकालकर मालोमाल हो सकता है तो क्या वह उस बताने वाले का शुक्रगुज़ार नहीं होगा? सन्त–महात्मा हमें समझाते हैं कि आप मुक्ति की खातिर क्यों मारे–मारे फिर रहे हो? परमात्मा तो आपके जिस्म, आपकी देह और वजूद के अंदर हैं।

गुरु सेवा और नाम महातम। सतसंग सतगुरु किया बखान।।

गुरु मुक्ति के साधन बताते हैं, अपना सतसंग जारी करते हैं। जीवों को नाम देते हैं और उस नाम की कोई फीस नहीं लेते। पूर्ण सतगुरु ये नहीं कहते कि आप किसी अधूरे गुरु के पास जाएँ।

गुरु करिये जाण के, पाणी पिए छाण के।

गुरु कभी भी अंधविश्वास के साथ नहीं करना चाहिए। हमें सोचना चाहिए क्या ये शब्द के माहिर हैं, शब्द के साथ जुड़े हैं? भक्ति का माहिर ही भक्ति करवा सकता है। मालिक से मिलने के लिए, मुक्ति के लिए हमें सतगुरु, सतसंग और नाम की ज़रुरत है। सतसंग में आकर हमारी तहकीकात पूर्ण होती है और हमारे अंदर नाम जपने का शौक, विरह और तड़प पैदा होती है। हमारी आत्मा नाम से बिछड़कर इस संसार में आती है और महात्मा हमें नाम के साथ ही जोड़ते हैं इसलिए पूरा गुरु ही हमें उस मालिक से मिलवा सकता है। बाकी सब छिलका है और कुछ करने की ज़रुरत नहीं। गुरु साहब कहते हैं:

बिनु संगति करम करै अभिमानी कढि पाणी चीकड़ु पावैगो।

सतसंग के बिना पढ़ना–पढ़ाना, जप–तप चाहे कितने ही श्रेष्ठ काम क्यों ना करते हों, यह ऐसा है जैसे साफ़ पानी को कीचड़ में डाल रहे हैं। मालिक दया करें तो ही हम सतसंग में आ सकते हैं। तुलसी साहब कहते हैं:

तुलसी पिछले पाप से हर कथा न सहाये।
चाहे सोवे चाहे चले चाहे दिए बात चलाये।

अगर हम सतसंग में आ भी जाएं लेकिन मालिक मेहर ना करें तो हमें सतसंग में नींद आ जाएगी या सतसंग में बैठे हुए भी हम दुनिया को सोचते रहेंगे। परमात्मा मेहर करें तो ही हम सतसंग से फायदा उठा सकते हैं। भाग्यहीन चोटें खाते हैं, वे कभी विषय–विकारों में, कभी शराबों–कबाबों में या कभी कोई और लड़ाई–झगड़ों में गिर जाते हैं। जब हम सतसंग नहीं करते तब ऐसी हालत होती है।

साधन तीन सार उन बरने। और साधन सब थोथे मान।।

सन्त आकर नाम के फायदे बताते हैं कि नाम क्या है, नाम क्यों जपना है, नाम कहाँ से उठ रहा है, नाम किस जगह धुनकारे दे रहा है और हम किस तरह नाम को पकड़ सकते हैं? फिर वे सतगुरु की पोजीशन बताते हैं कि सतगुरु को मालिक ने कमीशन दी हुई है वे जीवों को मालिक के पास ले जा सकते हैं। चाहे दस हों, चाहे दस हजार हों, चाहे दस लाख हों, परमात्मा सबको अपने घर में जगह देते हैं। गुरु साहब कहते हैं कि सन्त संसार में भंडारी बनकर आते हैं।

सउपे जिसु भंडार फिरि पुछ न लीतीअनु।

वे सतसंग की महिमा बयान करते हैं कि सतसंग के क्या फायदे हैं। हमारे मन पर सोहबत का बहुत असर होता है अगर हम शराबी–कबाबियों के बीच बैठते हैं तो हमें शराब पीने की, जुआ खेलने की आदत पड़ जाती है। अगर हम नाम जपने वालों की संगत और सोहबत में आते हैं तो हमारे अंदर भी नाम जपने का शौक, विरह और तड़प पैदा हो जाती है।

जैसी संगत वैसी रंगत।

हमें जैसी संगत मिलती है हमारे मन पर वैसा ही असर हो जाता है। क्यों न बुरी संगत छोड़कर अच्छी संगत में आया जाए। हुज़ूर महाराज कहा करते थे कि सतसंग करना हर एक के लिए इस तरह ज़रूरी है जिस तरह हम अपनी औलाद को तभी नेक बना सकते हैं जब हम खुद नेक बनेंगे।

मैं एक बड़ी ही ज़बरदस्त मिसाल देकर समझाया करता हूँ कि किसी बादशाह का एक लड़का था, उसका किसी बादशाह की लड़की के साथ प्रेम हुआ। उन्होंने रिश्ता माँगा लेकिन लड़की वालों ने मना कर दिया। उन दोनों ने सोचा की हमें किसी की रज़ामंदी की क्या ज़रूरत है। उन दिनों में जीपें–कारें नहीं हुआ करती थी, लोग ऊंट–ऊंटनी वगैरह पर सवार हुआ करते थे। उस लड़की ने अपने घर से ऊंटनी ली और दोनों उस पर बैठ गए। आगे पानी आया, पानी को देखकर लड़की ने बादशाह के लड़के से कहा, ''इसकी लगाम खींच, यह पानी में बैठ जाती है। बड़ी जल्दी ही कहने लगी कि इसकी माँ भी पानी में बैठ जाती थी।''

अब वह लड़का सोचता है कि जब पशु के ऊपर भी इतना असर है कि जिसकी माँ पानी में बैठ जाती थी उसकी बेटी भी बैठ जाती है तो मैं आज जिसे भगाकर ले जा रहा हूँ इसके पेट से जो औलाद पैदा होगी क्या वह नहीं भागेगी? लोग क्या कहेंगे कि फलाने की लड़की भाग गई, बदमाश है। मेरी कितनी बदनामी होगी? यह सोचकर लड़के ने कहा, ''मैं एक ज़रूरी चीज़ घर पर भूल आया हूँ। रात बहुत बड़ी है, चल हम वह चीज ले आते है फिर वापिस आ जाऐंगे।'' जब वे दोनों वापिस मुड़कर आए, महल के पास ऊंटनी से उतरकर बादशाह के लड़के ने कहा, ''तेरी मेरी राम–राम, तू अपने घर आराम कर मैं अपने घर आराम करूंगा।''

जब पशु–पक्षियों पर भी असर है और हम कह देते हैं कि फलानी भैंस की बछड़ी बड़ी अच्छी नसल की थी। जब हम पशु की नसल समझते

हैं तो क्या इंसान की नसल नहीं हो सकती? जिन्होंने अपनी औलाद को नेक बनाना है, वे खुद नेक बनें। हम सोचते हैं कि हम शराब–कबाब जितने मर्जी ऐब करें लेकिन हमारी औलाद नेक बने। यह कैसे हो सकता है?

महात्मा प्यार से समझाते हैं कि हम घर में जो ऐब करते हैं, यह अपनी औलाद की नाव में पत्थर डाल रहे हैं। महात्मा हमेशा नाम, सतसंग और सतगुरु से मिलाप के फायदे बताते हैं बाक़ी सब छिलका है। छिलका उठाने की कोई ज़रुरत नहीं है, स्वाद तो गिरी में है।

वेद शास्त्र और स्मृत पुरान। पढ़ना इनका बिरथा जान।।

आप यह नहीं कहते कि वेद–शास्त्र न पढ़ें लेकिन हम लोग जिस तरीके से पढ़ते हैं, वह व्यर्थ है, हमारे किसी काम के नहीं हैं। बानी पढ़ने से या बैठकर सुनने से हमें पता चलता है कि हमारे अंदर क्या कमज़ोरियाँ हैं और महात्मा हमें क्या उपदेश दे रहे हैं। लेकिन हमारी यह हालत है कि भाई बेचारा घर में बानी पढ़ रहा है और हम खेतों में घूम रहे हैं, सिनेमा देख रहे हैं या आने–जाने वाले रिश्तेदारों के साथ माथा मारते रहते हैं। हमें क्या पता है कि बानी ने हमारे घर में क्या कहा है? न पढ़ने वाले को पता है और न ही पढ़ाने वाले को पता है। महात्मा हमें प्यार से समझाते हैं:

पढ़या इल्म अमल न कित्ता पढ़या फेर पढ़ाया की।
आदत खोटी ना गवाई, मत्था फेर घसाया की।

जब हमने इल्म पर अमल ही नहीं करना पढ़कर फिर शराब–कबाब में लग जाना है तो उस पढ़ने–पढ़ाने का क्या फायदा हो सकता है? महात्मा कहते हैं कि आप विचार करके पढ़ें। इतना ज़रूर है कि लोग हमें यह कहेंगे कि ये बड़े अच्छे हैं इन्होंने अखंड पाठ करवाया, साधारण पाठ करवाया।

इसी तरह मैं राजस्थान के एक गांव में गया, वहाँ एक परिवार ने अखंड पाठ करवाया। रिश्तेदार विदा होने लगे, घर के एक सदस्य ने कहा अखंड पाठ की जहर तो हम अब उतारेंगे। मैं भी रात को वहीं था, उन्होंने

शराब पी, रात को बेचारा वही सदस्य घर की छत से गिरा, उसकी गर्दन टूट गई और वह खत्म हो गया। हम इस तरह से अखंड पाठ करवाते हैं।

आप खुद ही सोचकर देखें, जिस दिन आप पाठ पढ़ रहे थे क्या उस दिन आपको कोई फायदा हुआ, आपके अंदर काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार कम हुआ या जब आपने भोग डाला तब कोई फायदा हुआ? अगर आपकी वही हालत है तो आपके पढ़ने–पढ़ाने का क्या फायदा? आप एक बार नहीं, गुरु नानकदेव जी की बानी को करोड़ बार पढ़ें लेकिन विचार करके पढ़ें कि बानी क्या कहती है।

पंडित भेख पेट के मारे। वे संतन पर करते तान।।

सन्त संसार मंडल में जीवों को मालिक का संदेश देने के लिए आते हैं। उसमें चाहे उन्हें कितनी भी कठिनाई क्यों ना आए, जान की बाज़ी भी क्यों ना लगानी पड़े। पंडित और भाई लोग सिर्फ पेट पालने के लिए उनका विरोध करते हैं लेकिन महात्मा दुनिया में मिसाल बनकर आते हैं। गुरु नानकदेव जी ने करतारपुर गांव में खेती करके अपनी और अपने बच्चों की परवरिश की। आप कहते हैं:

गुरु पीरु सदाए मंगण जाइ। ता कै मूलि न लगीऐ पाइ।।
घालि खाइ किछु हथहु देइ। नानक राहु पछाणहि सेइ।।

जो गुरु–पीर कहलवाकर शिष्यों से मांगता है तो भूलकर भी ऐसे गुरु के पैरों पर माथा नहीं टेकना चाहिए। जो महात्मा दस नाखूनों से मेहनत की कमाई करके उसमें से भी लंगर में डालता हो, वही कारगर हो सकता है।

आप कबीर साहब की हिस्ट्री पढ़कर देखें, उन्होंने सारी जिंदगी ताना बुना हालांकि शाह बलख बुखारा, राजा बीर सिंह, बघेल सिंह उनके सेवक थे, उनको अच्छी से अच्छी सुविधा दे सकते थे। इसी तरह रविदास जी महाराज ने सारी जिंदगी जूतियां बनाई, राजा पीपा उनके सेवक थे और

भी कई राजा–महाराजा उनके चरणों में आकर झुके। इसी तरह मेड़ता की रानी मीराबाई भी उनकी सेविका थी। किसी ने मीराबाई को ताना मारा कि खुद तो महलों में बैठी मौज करती है और गुरु जूतियां बनाता है। सेवक से गुरु का ताना बर्दाश्त नहीं होता।

मीराबाई हीरा लेकर गुरु रविदास जी के पास गई, उसके दिल में ख़्याल आया कि इससे ये अपनी ज़िन्दगी अच्छी तरह बसर कर लेंगे, अच्छा मकान बना लेंगे। उसने रविदास जी से कहा, ''आप यह हीरा बेचकर, अच्छे मकान बना लें, अच्छे महल में रहें।'' रविदास जी ने कहा, ''बेटी, मुझे जो कुछ प्राप्त हुआ है, वह जूतियां बनाकर ही हुआ है अगर तुम्हें कोई ताना मारता है तो तू घर में बैठकर भजन कर लिया कर।''

मीराबाई के दिल में ख़्याल आया कि शायद अभी ये शरमा रहे हैं, बाद में हीरा बेच लेंगे। मीराबाई ने रविदास जी से कहा, ''मैं यह हीरा छप्पर में रखकर जा रही हूँ।'' जब मीराबाई साल के बाद आई तो उसके दिल में ख़्याल था कि रविदास जी ने बड़े–बड़े महल बनवा लिए होंगे लेकिन वहाँ ऐसा कुछ नहीं था। मीराबाई ने कहा, ''मैं यहाँ हीरा रखकर गई थी।'' रविदास जी ने कहा, ''बेटी, जहाँ रखकर गई थी, वहीं पड़ा होगा।''

इसी तरह हमारे सतगुरु महाराज सावन सिंह जी ने अपनी पेंशन से ही गुज़ारा किया। जब उनका आखिरी वक्त आया तो उन्होंने कहा, ''संगत मुझसे हिसाब ले सकती है, मैंने संगत की सब्ज़ी खाई है और पेट्रोल जलाया है। पेट्रोल भी संगत के काम के लिए ही जलाया था। इसी तरह महाराज कृपाल सिंह जी की हिस्ट्री पढ़कर देखें, उन्होंने भी अपना गुज़ारा पेंशन से ही किया।

महात्मा संसार मंडल में आकर दस नाखूनों से मेहनत की कमाई करके खाते हैं और सेवकों को भी यही उपदेश देते हैं कि आप दस नाखूनों से मेहनत करके रोजी–रोटी कमाएं, तभी आपका भजन अभ्यास बनेगा।

आपका जैसा अन्न होगा वैसा ही आपका मन होगा। चोरी से लाया हुआ अन्न आपका फायदा नहीं कर सकता है। गुरु नानक साहब कहते हैं:

पितरी चोर करेइ।

अगर आप चोरी का अन्न दान करते हैं या खाते हैं तो आप अपने पितरों को भी चोर बना रहे हैं। महात्मा हमें प्यार से समझाते हैं कि पेट के मारे लोग महात्मा के ऊपर कीचड़ फैंकते हैं कि ये तो परमात्मा को भी नहीं मानते। आप सोचकर देखें अगर महात्मा परमात्मा को नहीं मानेंगे तो दुनियादार क्या मानेंगे? दुनियादार बेचारों को कुछ पता ही नहीं कि महात्मा तो परमात्मा की भक्ति करने के लिए आते हैं। वे कभी किसी वेद–शास्त्र की निंदा नहीं करते बल्कि वे तो वेदों–शास्त्रों का रास्ता बताते हैं।

मैं सिखों के घर में पैदा हुआ था, मेरी गुरु ग्रन्थ साहिब में श्रद्धा थी। मेरे पिताजी हर छह महीने में श्री अखंड पाठ करवाते थे। मैं जब बाबा बिशन दास जी के पास गया जिनसे मुझे 'दो शब्द' का भेद मिला था, उन्होंने मुझे बड़े प्यार से समझाया और पूछा, ''तू गुरु नानक देव जी की बानी पढ़ता है?'' मैंने कहा, ''हाँ जी।'' उन्होंने कहा, ''उसमें क्या लिखा है?'' मैंने कहा, ''मैं बस पढ़ता ही हूँ और कुछ नहीं जानता।'' उन्होंने कहा, ''तू अच्छी तरह पढ़ इसमें तीन चीजें पूर्ण सतगुरु, सतसंग और नाम की भक्ति लिखी हुई हैं, बाकी तो सिर्फ मिसालें दी हुई हैं।''

हम तीन लोग इस खोज में लगे और हमने छह महीने गुरु ग्रन्थ साहिब को पढ़ा। मैं जो तुक पढ़ता, वही मेरे साथ वाले भी पढ़ते थे। दिल में यह ख़्याल था कि कहीं मैं गलत न होऊं या ये गलत न हो। लोग हमारी बड़ी हँसी उड़ाते थे कि ये लोग क्या कर रहे हैं। जब हमें उसमें से जो बातें हमने पकड़ी हुई थी वह नहीं मिली तो बाबा बिशनदास जी के आगे सिर झुकाकर खड़े हो गए। हमने कहा, ''बस जी, आप जो कुछ कहते हैं वह ठीक है और हम गलत हैं।''

महात्मा हमें प्यार से समझाते हैं कि ये लोग सन्तों के ऊपर कीचड़ उछालते हैं, हम लोग इनका वजन उठाकर खुश रहते हैं। कबीर साहब कहते हैं, ''यह लोग खुद तो नर्क में जाते हैं, हमें भी साथ में खींचकर नर्क में ले जाते हैं।'' गुरु नानक देव जी कहते हैं:

खेतु पछाणै बीजै दानु।

सबसे पहले हमें दिए गए दान की तहकीकात करनी चाहिए कि यह कहीं बुरी जगह तो नहीं लग रहा लेकिन हम सोचते हैं कि हमने तो दे दिया यह अब उसकी मर्जी है, वह उसे जहां मर्जी लगाए बेशक शराब पिए। गुरु नानक साहब कहते हैं कि जिसे आप दान देते हैं अगर उसने उन पैसों की शराब पी या उस पैसे को बुरे कर्म में लगाया तो आपको वैसा ही फल मिलेगा अगर अच्छी जगह लगाएगा है तो उसका फल भी ज़रूर मिलेगा।

आप गुरु नानक देव जी की हिस्ट्री पढ़कर देखें, उनसे चक्की पिसवाई गई, उन्हें कुराहिया कहा गया। गुरु अर्जुन देव जी को गरम तवी पर बिठाया गया। गुरु गोबिन्द सिंह जी ने तीन महीने तक कमरकसा नहीं खोला अगर बंदा एक दिन ना नहाए तो क्या हालत हो जाती है? हमने इन लोगों के कहने पर महात्माओं के ऊपर कीचड़ फैंका और उन्हें कष्ट दिए। हमनें जिन महात्माओं से फायदा उठाना था, उन्हें दुःख पहुँचाए। गुरु साहब कहते हैं:

नानक वीचारहि संत जन चारि वेद कहंदे।
भगत मुखै ते बोलदे से वचन होवंदे।।
प्रगट पहारा जापदा सभि लोक सुणंदे।
सुखु न पाइनि मुगध नर संत नालि खहंदे।।
ओइ लोचनि ओना गुणै नो ओइ अहंकारि सड़ंदे।
ओइ विचारे किआ करहि जा भाग धुरि मंदे।।
जो मारे तिनि पारब्रहमि से किसै न संदे।
वैरु करहि निरवैर नालि धरम निआइ पचंदे।।
जो जो संति सरापिआ से फिरहि भवंदे।
पेड़ु मुँढाहूँ कटिआ तिसु डाल सुकंदे।।

मैं जो कुछ कहता हूँ, वही चारों वेद भी कहते हैं। भक्त जो कुछ बोलते हैं, वही वचन दुनिया में पक्के होते हैं। जो लोग सन्तों पर कीचड़ फैंकते हैं, वे कभी सुख नहीं पा सकते। उन लोगों को यही ईर्ष्या होती है कि महात्मा की शोभा क्यों हो रही है, हमारी क्यों नहीं हो रही। महात्मा निर्वेर होते हैं जो भी उनके साथ वैर करेगा, धर्मराज आगे उसका हिसाब लेता है। जो पेड़ ही कट गया उसकी डाल अपने आप ही सूख जाती है। महात्मा हमारा फायदा करने के लिए आते हैं और हम उन्हें कष्ट देते हैं।

हित कर संत उन्हें समझावें। वे मानी नहिं मानें आन।

सन्त उनके साथ भी प्यार करते हैं और उन्हें भी प्यार से समझाते हैं कि आओ, हम आपको भी शांति दे सकते हैं, नाम–शब्द के साथ जोड़ सकते हैं, आपको आपके घर सच्चखंड ले चलते हैं, यह हमारी जिम्मेदारी है अगर आपका फायदा न हो तो आप जो मर्जी कह सकते हैं लेकिन उनको जितना मर्जी समझा लें वे फिर भी टेढ़े ही जाते हैं।

उनके चाह मान और धन की। परमारथ से खाली जान।।

वे धन और मान–बड़ाई के भूखे होते हैं, उनको परमार्थ की क्या कद्र हो सकती है? वे क्या जाने कि परमार्थ और परमात्मा भी कोई चीज़ हैं।

वे चौरासी चक्कर मारें। फिर फिर गिरते चारों खान।

स्वामी जी महाराज कहते हैं कि यह नहीं कि उनको कोई फल नहीं मिलता। वे बार–बार चौरासी में जाते हैं, कभी जन्म लेते हैं कभी मरते हैं, कभी पशु–पक्षी बनते हैं। बहुत देर के बाद इंसानी जामे की बारी आती है। पशु–पक्षी और इंसान एक ही तरीके से खाते–पीते और भोग भोगते हैं, यह सबको ज्ञान है। सिर्फ इंसानी जामे को नाम जपने का ज्ञान है, वह अपना जन्म संवार सकता है। गुरु साहब कहते हैं:

नानक जीअ उपाइ कै लिखि नावै धरमु बहालिआ।।
ओथै सचे ही सचि निबड़ै चुणि वखि कढे जजमालिआ।।
थाउ न पाइनि कूड़िआर मुह कालै दोजकि चालिआ।।

यह न कहें कि जो कुछ हम करते हैं, कोई उसका लेखा–जोखा नहीं कर रहा। पहले भी किसी ने किया था, आज भी करेगा। अगर हम पिछले लेखे–जोखे को समझ रहे हैं कि हम दुःख–सुख अपने कर्मों के मुताबिक़ पा रहे हैं तो आगे भी ऐसा ही होगा। जीवों को पैदा करके उनके लेखे–जोखे पर धर्मराज को बिठाया हुआ है। मैली आत्मा को वहाँ जगह नहीं मिलती, वहाँ पवित्र आत्मा अलग की जाती है। गुरु नानक साहब कहते हैं:

नानकु आखै रे मना सुणीऐ सिख सही, लेखा रबु मंगेसीआ बैठा कढि बही।।
अजराईलु फरेसता होसी आइ तई, आवणु जाणु न सुझई भीड़ी गली फही।।

मैं जो शिक्षा देता हूँ वह सही है। आपने जहां जाना है, वह जगह बहुत तंग रास्ता है। उस मालिक ने लेखा ज़रूर लेना है। स्वामी जी महाराज कहते हैं कि वे चौरासी में चले जाएंगे और चक्कर खाएंगे।

पिछले जुग की विद्या पढ़ते। कोई न्याय वेदान्त बखान।।
ना साधन अधिकार न परखें। पढ़ने का करते अभिमान।।

स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''उन्होंने कोई साधना नहीं की और न ही उन्हें नाम–शब्द देने का कोई अधिकार है। सिर्फ पढ़ने का ही अहंकार है कि हम घंटे में इतना पढ़ लेते हैं।''

महाराज सावन सिंह जी बताया करते थे कि जब मैं पोठोहार गया, वहाँ मुझे आठ सौ पाठ के भोग किए हुए कई भाई मिले। जब मैंने उनसे पूछा, ''क्यों भाई, कोई शांति आई? अंदर नाम की चिंगारी देखी?'' वे कहने लगे, ''नहीं, बस यही सुना है कि पढ़ते रहें।'' महात्मा कहते हैं कि बानी तो यह कहती है कि मुक्ति पढ़ने में नहीं शब्द के साथ जुड़ने में है। हम सिर्फ पढ़ने का मान करते हैं। हज़रत बाहू कहते हैं:

पढ़ पढ़ इलम हज़ार किताबां, आलम हूए सारे हू।
एक हरफ़ इशक दा न पढ़ जानण,भुल्ले फिरन बिचारे हू।

हम हज़ारों किताबें पढ़कर विद्वान नाम रखवा लेते हैं। जिस लफ्ज ने, कलमे ने हमारी मुक्ति करनी थी, वह हमने नहीं पढ़ा उसे भूले फिर रहे हैं।

ज़बानी कलमा हर कोई आखे, दिल दा पढ़दा कोई हू।
जिथे कलमा दिल दा पढ़ीए, ओथे जीभे मिले न ढोई हू।।

जुबान से तो सारे 'ला इलाहा इल्लाह', 'वाहेगुरु–वाहेगुरु', 'राम–राम' करते हैं, दिल का कोई–कोई ही पढ़ता है। जहां दिल का कलमा पढ़ा जाता है, वहाँ जीभ हिलाने की कोई ज़रुरत नहीं। बल्कि वे कहते हैं:

बाहू जीभ न हले ते होठ न फड़कन, खास नमाज़ी सोई हू।।

वहां न होठ फड़कते हैं न जीभ हिलती है, असली नमाज़ी वही हैं।

हाफ़ज़ हिफ़ज़ कर करन तकब्बर, करन मुल्लां वडिआई हू।
सावण माह दे बदलां वांगू, फिरन किताबाँ चाई हू।।
जित्थे वेखन चंगा चोखा, ओथे पढ़न कलाम सवाई हू।
ओह दोहीं जहानी मुट्ठे बाहू,जिन्हां खाधी वेच कमाई हू।।

लोग पढ़कर अहंकार करते हैं कि हम इतना पढ़ गए हैं, इतना पढ़ लेते हैं। वे इधर भी ठगे गए, आगे भी ठगे गए। गुरु नानक साहब कहते हैं:

ध्रिग तिना का जीविया जो लिख लिख बेचे नाओ।
खेती जिनकी उजड़ी खलवाडे क्या थाओ।।

इस जुग की विद्या नहिं पढ़ते। तांते उलटे गिरे निदान।।

मैं जो कुछ शुरू में बताकर आया था, वही स्वामी जी महाराज दोहरा रहे हैं। हम क्यों उल्टे गिरते हैं? इस युग की विद्या नाम की कमाई थी। नाम के बगैर कलयुग में और कोई कर्म–धर्म नहीं है। मैंने गुरु साहब की बहुत ही सुन्दर मिसाल देकर समझाया था:

अब कलू आइओ रे, इकु नामु बोवहु बोवहु।।
अन रूति नाही नाही,मतु भरमि भूलहु भूलहु।।

और कोई वक्त है ही नहीं। ये लोग पिछले युगों से भूले हुए हैं और इस युग का धर्म नहीं पढ़ रहे।

दीन गरीबी मत इस जुग का। और गुरु भक्ती कर परमाण।।

अपने अंदर दीनता पैदा करनी है, सच्ची दीनता नाम की कमाई से ही आएगी इसके अलावा बाकी गुरु भक्ति है जैसे अपने आपको पहचानना, फैले हुए ख्याल को सिमरन के जरिए आँखों के पीछे इकट्ठा करना। सिमरन करने से हमारे अंदर सोई हुई ताकत जाग जाती है। हम सिमरन के जरिए सूरज, चन्द्रमा, सितारे पार कर जाते हैं, आगे ध्यान की ज़रुरत पड़ती है। जब ध्यान पक जाता है, सतगुरु अंदर प्रकट हो जाते हैं फिर आप जहां मर्जी चले जाएं, गुरु आपके साथ हैं। कमरा बंद है, रात का वक्त है, आप गुरु को याद करें, गुरु आपके पास हैं। जो सवाल करेंगे गुरु उसका जवाब देंगे, बाकी नाम भक्ति है।

ताते निरमल निश्चल चित होय। गगन चढ़ाओ शब्द निशान।।
सुरत शब्द मारग अंतरमुख। पांच शब्द का गहो ठिकान।।

जब गुरु भक्ति पूर्ण हो जाती है, गुरु प्रकट हो जाते हैं, ऊपर सचखण्ड से धुन उठती है, गुरु कहते हैं कि पकड़ धुन और चल ऊपर इसलिए सारे महात्माओं ने पांच शब्द का उपदेश दिया है। गुरु नानक साहब कहते हैं:

घर महि घरु देखाइ देइ सो सतिगुरु पुरखु सुजाणु।
पंच सबद धुनिकार धुनि तह बाजै सबदु नीसाणु।।

आपके अंदर पांच शब्द आ रहे हैं। शब्द तो एक ही है जो सचखण्ड से उठता है लेकिन उसको पांच शब्द कहकर बयान किया गया है क्योंकि यह पांच मंज़िल से होकर गुज़रता है। जिस तरह दरिया जहां से निकलता है वहाँ पानी की कोई और आवाज है, जब पत्थरों के बीच से पानी आता है वहाँ उसकी कोई और आवाज है, जब वह पानी साफ़ ज़मीन पर आ

जाता है तो उसकी कोई और आवाज है। इसी तरह पानी तो एक ही है, जैसी–जैसी जगह आती है वैसी–वैसी आवाज तब्दील होती जाती है। मैं जो कुछ आपको बताता हूँ आप अंदर जाकर देखें। आप शब्द दर शब्द, पहली मंज़िल के शब्द को पकड़कर दूसरी पर चले जाएंगे। दूसरे शब्द को पकड़कर तीसरे पर, तीसरे को पकड़कर चौथी मंजिल पर चले जाएंगे, इसी तरह जो शब्द सच्चखंड से आ रहा है, उसे पकड़कर आप सच्चखंड अपने घर पहुँच जाएंगे।

शब्द शब्द पौड़ी पै चढ़ कर। पहुँचो सच्चखंड सतनाम।।
ताते पहले गुरु को ध्याओ। और काम सब पीछे जान।।

स्वामी जी महाराज कहते हैं कि मैंने आपको बताया है कि परमात्मा आपके शरीर के अंदर हैं। हम पांच शब्द को अपने अंदर सीढ़ी दर सीढ़ी चढ़कर हासिल कर सकते हैं। हमें सबसे पहले ऐसे गुरु की शरण में जाना पड़ता है, जिसने उन्हें प्रकट किया होता है। वे हमें बिठाकर बड़े प्यार से समझा देते हैं कि किस तरह उस शब्द को सुनना है, सीढ़ी दर सीढ़ी चढ़ना है। यह नहीं कि वे हमें सिर्फ नाम ही बताते हैं बल्कि वे हमारी मदद भी करते हैं। अगर नाम लफ्ज होता तो पांच साल की चरखा कातने वाली लड़की भी वह नाम बता सकती है।

नाम किसी की आत्मा को सचखण्ड तक पहुँचाने की जिम्मेदारी है, ऐसा नहीं की दो अक्षर बताए और पीछा छुड़ा लिया। अगर हमारे अंदर कोई रुकावट है तो वे उसे दूर करते हैं। चाहे आप उनसे हजारों मील दूर हों, उनके लिए नजदीक या दूर का कोई फर्क नहीं पड़ता। वे अंदर ही आपकी तरक्की करेंगे, अंदर ही आपको रास्ता बताएंगे।

गुरु ली मूरत हृदे बसाओ। चंद्र चकोर प्रीत घट आन।।

ऐसा नहीं कि नाम ले लिया और घर आ गए। सन्त कुछ जिम्मेदारी भी बताते हैं कि आपको बुरे कर्मों से बचना है। अब आपको गुरु मिल गए हैं, गुरु और शिष्य का प्यार ऐसा होना चाहिए, जिस तरह जब रात को चंद्रमा चढ़ता है, चकोर पक्षी टिक–टिकी लगाकर बैठ जाता है। जब चंद्रमा दूसरी साइड जाता है वह उसी तरफ अपनी गर्दन मोड़ता जाता है, कभी भी अपनी गर्दन उठाकर नहीं देखता। ऐसा प्यार हो, तब जाकर आप रसाई कर सकते हैं फिर ही आप कामयाब हो सकते हैं।

जब लग ऐसी प्रीत न होवे। तब लग साधन यही बखान।।

गुरु को हमारी प्रीत की कोई ज़रुरत नहीं क्योंकि वे खुद ही किसी की प्रीत में लगे हुए हैं। गुरु का प्यार ही हमारे खोटे कर्मों का नाश करता है। सेवक को गुरु के प्यार की बहुत ज़रुरत होती है।

गुरु भक्ति जब पूरन हो ले। तब सुर्त चढ़े अधर असमान।।

जब गुरु भक्ति मुकम्मल हो जाएगी, हम अपने फैले ख्याल को सिमरन के ज़रिए इकट्ठा कर लेंगे, तब गुरु का स्वरुप अंदर टिकना शुरू हो जाएगा। तब हमारी सुरत अपने आप ही ऊपर चढ़नी शुरू हो जाती है। शब्द के अंदर क़शिश होती है, वह खुद ही खींच लेता है।

गुरु भक्ति बिन शब्द में पचते। सो भी मानुष मूरख जान।।

जो लोग गुरु से मिले ही नहीं, गुरु की ज़रुरत ही नहीं समझते, वे कहते हैं कि शब्द हमारे पास है, हम मुक्त हो जाएंगे। वे कभी भी मुक्त नहीं हो सकते, वे मूर्ख हैं। गुरु नानक साहब कहते हैं:

वेश्या सती होना चाहे कौन करे परतार।

जिस तरह कोई वेश्या सती होना चाहे तो किस पति के साथ सती होगी? उसके पास तो सैंकड़ों आते हैं। इसी तरह कबीर साहब कहते हैं:

जो निगुरा सिमरन करै, दिन में सौ सौ बार।

जिस तरह निगुरा आदमी चाहे लाखों बार सिमरन करता रहे, उसे कौन आकर तारेगा? जब दावेदार सामने नहीं तो दावा किस बात है? जब हमें कोई गुरु मिला ही नहीं, हम किसका ध्यान करें, किसका नाम लें। हम किस तरह कामयाब हो सकते हैं?

महाराज जी मिसाल देकर समझाते थे, एक दुकानदार है, उसकी दुकान में सारा समान मौजूद है अगर हम उसकी गद्दी पर उसकी कोई तस्वीर रख दें तो क्या वह तस्वीर कोई समान बेच लेगी? वह तस्वीर कभी भी सामान नहीं बेच सकती। इसी तरह जब महात्मा ने हमारी कोई जिम्मेदारी नहीं ली, हमें नामदान ही नहीं दिया, हम उसे जितना मर्ज़ी प्यार से याद करते रहें, महात्मा का तो कोई कसूर नहीं, उसमें कसूर तो हमारा है। गुरु साहब हमें प्यार से समझाते हैं:

जिसका गृहु तिनि दीआ ताला कुँजी गुर सउपाई।
अनिक उपाव करे नही पावै बिनु सतिगुर सरणाई।
जिनके बंधन काटे सतिगुर तिन साध संगति लिव लाई।

गुरु नानक साहब, कबीर साहब या मौलाना रूम ने यह कोई नया रास्ता नहीं बनाया। गुरु साहब कहते हैं कि जिस परमात्मा ने यह शरीर बनाया है उसने ही ताला लगाया है। वह अपने मिलने का जो मर्जी तरीका रख सकते थे लेकिन उन्हें यही तरीका मंजूर था। इस शरीर को ताला लगाकर, चाबी गुरुमुखों के हवाले कर दी है। जिन्हें वे अपने साथ मिलाना चाहते हैं, उन्हें सबसे पहले सतसंग में लाते हैं।

जब हम सतसंग में बैठते हैं, हमारे अंदर नाम जपने का शौक अपने आप ही पैदा हो जाता है। जब तक हमारे बुरे कर्म, हमारी आँखों के सामने रहते हैं, उतने दिन हम सतसंग में जाने की सोच ही नहीं सकते। जब आप आग के नजदीक होंगे तो आपको आग का सेक लगेगा। इसी तरह जब हम सतसंग में बैठे रहेंगे, ज़रूर हमारा सुधार होगा। सवाल ही पैदा नहीं

होता कि हमारा सुधार न हो। वे इंसान मूर्ख हैं, जिन्हें गुरु मिला ही नहीं, नाम मिला ही नहीं और वे कहते हैं कि हम नाम–शब्द की कमाई करते हैं।

शब्द खुलेगा गुरु मेहर से। खैंचे सुरत गुरु बलवान।।

अब हमें पता ही है कि जब ज़बरदस्त ताला लगा हुआ है कोई चाबी लगाएगा तो ही ताला खुलेगा। शब्द तो गुरु की दया–मेहर से ही खुलेगा। वे बलवान हैं, ताला खोलने के लिए आते हैं। गुरु साहब कहते हैं:

नउ दरवाजे काइआ कोटु है दसवै गुपतु रखीजै।
बजर कपाट न खुलनी गुर सबदि खुलीजै।।

हमारी देह बड़ा खूबसूरत किला है, इसके नौं दरवाज़े है। दो आँखों के सुराख हैं, दो कानों के सुराख हैं, दो नाक के सुराख हैं, मुँह है, नीचे दो इन्द्रियों के सुराख हैं। लेकिन जहाँ से परमात्मा को मिलना है वह रास्ता गुप्त है, परमात्मा ने आँखों के पीछे पर्दा डालकर हमें बाहर निकाला हुआ है। पत्थर का बड़ा ज़बरदस्त बजर का दरवाजा लगा हुआ है, कोई सूरमा ही इसे खोल सकता है। स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''बलवान गुरु ही आपके अंदर के ताले को खोल सकते हैं।''

गुरुमुखता बिन सुरत न चढ़ती। फूटे गगन न पावे नाम।।
गुरुमुखता है मूल सबन की। और साधन सब शाखा जान।।

प्रभु को मिलने के लिए गुरुमुखता सबका मूल है, बाकी जितने साधन हैं वे सब शाखाएँ हैं।

माता को जस पुत्र प्यारा। और कामी को कामिन जान।।
मछली को जस नीर अधारा। चात्रिक को जस स्वांति समान।।
ऐसा गुरु प्यारा जब होगा। तब कुछ आगे पंथ चलान।।

स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''जिस तरह माँ को पुत्र प्यारा है। कामी को अपनी स्त्री प्यारी है। पपीहे को स्वांति बूँद से प्यार है। मछली का पानी

से प्यार है, पानी से निकाली नहीं और तड़फ के मरी नहीं। उसी तरह जब तक हमारे अंदर गुरु के लिए तड़फ नहीं बनती। वे हमारे अंदर बैठे हैं, कभी धोखा नहीं खाते, पर्दा नहीं खोलते। जब तक हम प्योर और साफ नहीं होते क्योंकि हम दुनिया को और अपने आपको तो धोखा दे सकते हैं लेकिन जो शब्द रूप गुरु हमारे अंदर बैठे हैं, उन्हें धोखा नहीं दे सकते।

कहना था सो सब कह दीन्हा। अब तू चाहे मान न मान।।

स्वामी जी महाराज कहते हैं, सन्त जो कुछ भी कहते हैं, जीवों के भले के लिए कहते हैं। आगे आपकी मर्जी है, मानो या ना मानो।

अपने जीव की कुछ दया पा लो। चौरासी का फेर बचा लो।

नाम जपना, जिंदगी को पवित्र बनाना किसी पर एहसान करना नहीं होता, यह तो हमने अपने ऊपर दया करनी है।

यह आरत गुरुमुख की गाई। गुरुमुख होय सो करे प्रमाण।।
राधास्वामी भक्ति बताई। गुरु की भक्ति करो यह जान।।
और भक्ति सब दूर बहाओ। क्यों पड़ते चौरासी खान।।
गुरु भक्ति सम और न कोई। राधास्वामी किया बखान।।
गुरु का ध्यान करो तुम निस दिन।गुरु का शब्द सुनो नित कान।
नैन श्रवण और हिरदा तीनों। शीशमहल सम निरमल जान।।
राधास्वामी ज़ोर देए कर। गुरुभक्ति को कहें प्रमाण।।

***

16 पी.एस. राजस्थान आश्रम में सतसंगों के कार्यक्रम

1. 1, 2 व 3 नवम्बर 2024
2. 29 नवम्बर, 30 नवम्बर व 1 दिसम्बर 2024

RNI No - RAJHIN/2003/9899